INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.14
www.ijmer.in

NON-VIOLENCE IN SWAMI VIVEKANANDA'S THOUGHT

Dr. Shikha Agarawal
Associate Professor Political Science
Government Girls College,
Sujangarh, (Churu) Rajasthan, India

Abstract

In India, culture has been expressed in the form of spiritual ideals and traditions. Jainism and Buddhism are known as the philosophies giving the most importance to non-violence in the Indian thought stream. In Indian thought, the idea of non-violence is not an inert principle, but has been recognized as a dynamic and moral belief, whose objective has not been limited to non-violence only. Rather, it has been based on principles like selfless love, compassion and justice towards others for the establishment of humanity. This dynamic form of non-violence has been taken from the ancient thought stream till Swami Vivekananda. In the presented research paper, the functional form of non-violence has been analyzed in the thinking of Swami Vivekananda.

सारां”ा

भारत में आध्यात्मिक आदर्शों एवं परम्पराओं के रूप में संस्कृति की अभिव्यक्ति हुई हैं भारतीय चिन्तन धारा में जैन व बौद्ध धर्म अहिंसा को सर्वाधिक महत्व देने वाले दर्शन के रूप में जाने गए हैं। भारतीय चिंतन में अहिंसा का विचार कोई जड़ सिद्धांत नहीं है, अपितु एक गत्यात्मक और नैतिक आस्था के रूप में जाना गया है जिसका उद्देश्य केवल 'हिंसा नहीं करने' तक सीमित नहीं रहा है। वरन् यह मानवता की स्थापना हेतु दूसरों के प्रति निस्वार्थ प्रेम, करूणा, न्याय जैसे सिद्धांतों पर अधारित रहा है। प्राचीन चिन्तन धारा से स्वामी विवेकानन्द तक अहिंसा के इसी गत्यात्मक स्वरूप को लिया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र मे स्वामी विवेकानंद के चिन्तन में अहिंसा के क्रियात्मक स्वरूप का विश्लेषण किया गया है।

भारतीय चिंतन धारा में अहिंसा का विचार प्राचीन समय से अति महत्वपूर्ण रहा है। अहिंसा का चिंतनकेवल 'अ+हिंसा =हिंसा नहीं करना' पर ही आधारित नहीं है वरन् उसके सकारात्मक स्वरूप को अत्यधिक महत्व देता है। यह विचार एक ऐसे समाज की रचना को महत्व देता है जो मानवतावादी नैतिक जीवन को स्वीकार करने वाला हो और शोषण विहीन, न्यायपूर्ण, समतावादी समाज और राज्य की रचना करे।

आज की सबसे बड़ी समस्या मानव जाति का विघटित और विभाजित स्वरूप है। बर्ट्रेन्ड रसेल जैसे विचारक आदिम हिंस्रकता को इसका कारण मानते हैं। उनके अनुसार 'यदि मानव जाति को एकता की उपलब्धि करनी है तो हमारी आदिम हिंसकता को समाप्त करने का मार्ग खोज निकालना आवश्यक है।'[1]

अहिंसा मन से प्रारम्भ होने वाला विचार है जिसे केवल आध्यात्मिक स्तर पर प्रयुक्त करने के स्थान पर जीवन के प्रत्यके क्षेत्र में प्रयुक्त करने की आवश्यकता को महत्व दियाजाता रहा है। इसीलिए इसकी व्याख्या सिर्फ अस्त्र–शस्त्र नहीं उठाने तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसकी व्याख्या आध्यात्मिक जीवन की पवित्रता एवं श्रेष्ठता, मानव जाति के बन्धुत्व बोध तथा शांति के प्रति प्रेम जैसे आदर्शों के आधार पर एक पूरी नयी पीढ़ी को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता[2] पर जोर देने के रूप में की गई। जिसका अर्थ है ' अहिंसा को आध्यात्मिक स्तर से सामाजिक स्तर पर प्रयुक्त कर समाज व राज्य का उत्थान करना। ईसा मसीह इसे विशुद्ध प्रेम व मानवता के रूप में प्रस्तुत करते हैं तो जैन व बौद्ध धर्म में जीवन शैली के रूप में अहिंसा को जीवन का आधार मानते हुए मानव

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.14
www.ijmer.in

मात्र के प्रति करूणा व प्रेम के रूप में इसकी व्याख्या की गई है। महात्मा गांधी की पहचान उनकी अहिंसा के प्रति प्रतिबद्धता से ही हुई है। जिसके आधार पर उन्होंने दक्षिण अफ्रिका और भारत दोनों जगह सत्याग्रह में सफलता प्राप्त की।

साधारणतया अहिंसा की व्याख्या किसी को चोट या कष्ट न पहुंचाने के रूप में की जाती है। विस्तृत अर्थ में मन, कर्म वचन से किसी को भी कष्ट नहीं पहुंचाना अहिंसा है। और भी अधिक सकारात्मक रूप में अहिंसा अधिकतम प्रेम, दया, करूणा और आत्म बलिदान का दूसरा रूप है। भारतीय चिन्तन में इसी अर्थ में अहिंसा की व्याख्या करते हुए सामाजिक व राजनीतिक उत्थान के साधन के रूप में इसका प्रयोग किया गया है।

महात्मा गांधी के पूर्ववर्ती स्वामी विवेकानन्द ने 'अहिंसा' को वेदांत के आधार पर प्रस्तुत किया। जो उनके चिन्तन को मानवतावादी अर्थ में प्रकट करता है। स्वामी विवेकानन्द का चिन्तन 'मैं ब्रह्म हूं' के आधार पर सभी प्रणियों के प्रति समता का विचार रखकर, प्रत्येक प्राणी को अपनी आत्मा समझ कर प्रेम करने का सिद्धान्त देता है। स्वामी विवेकानंद का कहना था कि 'प्रेम, और केवल प्रेम का ही मैं प्रचार करता हूं और मेरे उपदेश वेदान्त की समता और आत्मा की विश्व व्यापकता, इन्हीं सत्यों पर प्रतिष्ठित है।[3] अहिंसा का सिद्धान्त सिर्फ किसी जाति, भाषा या देश तक सीमित नहीं है, वह मानवता पर आधारित है। यह सिद्धान्त मानव को मानव के रूप में देखता है उसे धर्म, जाति या अन्य खंडों में बांट कर नहीं देखता। इसीलिए यह विचार विश्वव्यापी रूप में प्रकट होकर विश्व की विभिन्न समस्याओं का हल कर सकता है। जब स्वामी विवेकानंद आह्वान करते हैं– '' आओ, मनुष्य बनो, अपनी संकीर्णता से बाहर आओ और अपना दृष्टिकोण व्यापक बनाओ[4] तो वे एक ऐसे अहिंसक समाज की कल्पना करते हैं जो गरीबों के प्रति होने वाली हिंसा और विषमतापूर्ण व्यवस्था से रहित हो।

स्वामी विवेकानंद अहिंसा को 'निस्वार्थता' से जोड़ते हैं जो धर्म की कसौटी है और निस्वार्थी व्यक्ति ही आध्यात्मिक और ईश्वर के करीब हो सकताहै।[5]क्योंकि ऐसा व्यक्ति ही स्वयं से अधिक दूसरों के बारे में सोचता है। हिंसा के पीछे व्यक्ति का स्वार्थ है। यदि मानव की चेतना, इंद्रिय या अहम् के स्तर पर ही कार्य करती है तो वह सिर्फ अशांति व तनाव ही फैला सकती है। परन्तु यदि वह दिव्य आयाम या उसके निकट के स्तर पर कार्य करती है तो वह स्वाभाविक तथा सहज रूप से प्रेम, शांति व निर्भयता के केन्द्र बन जाती है।

यूनेस्को की प्रस्तावना में कहा गया है–' चूंकि युद्ध की शुरूआत लोगों के मन से होती है। इसलिए लोगों के मन में ही शांति के साधनों का निर्मण होना चाहिए।' स्वामी विवेकानंद इसी शांति के लिए 'मनुष्य के भीतर के पशुत्व पर विजय'[6] पाना चाहते हैं। मानव में निहित देवत्व की अभिव्यक्ति से सभी मनुष्यों के साथ आध्यात्मिक एकता का अनुभव करके एक व्यक्ति निर्भय और शांत हो सकता है। यह स्थिति मानव के सभी तनावों को उसके उच्चतर मानवीय व्यक्तित्व में विलीन कर देता है। और इस तरह यह चिन्तन सभी संकीर्ण और हिंसक दबावों से तथा सभी प्रकार के राजनीतिक, धार्मिक, जातीय उन्मादों व द्वेषों से परे समता मूलक अहिंसक समाज की रचना करता है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.14
www.ijmer.in

प्राचीन भारत के मूल चिंतन से प्रभावित तथा भारतीय परम्परा के प्रति गर्वान्वित, विवेकानंद का दृष्टिकोण जीवन की समस्या से प्रति अत्यंत आधुनिक था और वे प्राचीन तथा अर्वाचीन भारत के बीच एक सेतु के समान थे।[7]उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में चेतना जाग्रत करना प्रारम्भ किया जिसमें उनका मुख्य उद्देश्य भारतीय जनमानस को जगाना और आधुनिक युग की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम एक वास्तविक मानवता वादी समाज व्यवस्था का गठन करना था। जैन व बौद्ध धर्म की करूणा और दया का सच्चा स्वरूप स्वामीजी के सिद्धांतों से तब प्रकट होता है जब वे कहते हैं––'पहले रोटी और फिर धर्म। जब तक लाखों व्यक्ति भूखे और अज्ञानी है तब तक मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को कृतघ्न समझता हूं जो उनके बल पर शिक्षित बना, और आज उनकी ओर ध्यान नहीं देता[8]गरीबों और पद्दलितों का शोषण करके धन एकत्र करने वाले लोग, मानव समाज में हिंसा को बढ़ावा देते हैं। अहिंसा के सामाजिक आर्थिक स्वरूप को प्राप्त करने के लिए हिंसा करना अनावश्यक है। बल्कि उसे प्रेम से प्राप्त किया जा सकता है। यह विचार आत्म बलिदान पर आधारित है। निस्वार्थ प्रेम और निस्वार्थ कार्यही जीवन का मूल मंत्र है और उसी से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक उत्थान सम्भव है। महात्मा गांधी के चिंतन में यही भाव अधिक विस्तृत रूप से प्रकट होता है। जब महात्मा गांधी कहते हैं कि सक्रिय रूप में अहिंसा सर्वजीवों के प्रति सद्भावना है, यह विशुद्ध प्रेम है।[9] तो वे स्वामी विवेकानंद के निस्वार्थ प्रेम और मानव मात्र के प्रति दया, करूणा की परम्परा को ही आगे बढ़ाते हैं। स्वामी विवेकानंद आत्म त्याग को वैसे ही महत्व देते है जैसा महत्व आगे जाकर महात्मा गांधी ने आत्मपीड़न को दिया है। स्वामीजी कष्ट सहन करके भी बार–बार जन्म लेकर मानवता के दुखों को दूर करना चाहते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति में शक्ति और आत्मबल का संचार उसे अहिंसक बनाता है। सामाजिक समानता लाने, शोषण का विरोध करने और आर्थिक राजनीतिक उन्नति के लिए स्वामी विवेकानंद हथियार उठाने, प्रतिशोध लेने या हिंसा करने के स्थान पर 'अभयम्' का संदेश देते हैं। भय से व्यक्ति शोषण और कष्ट का प्रतिकार नहीं कर पाता परिणामतः शोषण का शिकार होता है। इसीलिए उन्होंने उद्घोष किया 'उत्तिष्ठ। जाग्रत प्राप्यवरानिबोधतः' उठो, जागो और जब तक अपने अंतिम लक्ष्य तक नहीं पहुंच जाओ, तब तक चैन न लो[10]वास्तव में स्वयं को कमजोर मानने से अहिंसक प्रतिकार की शक्ति कम हो जाती है। दृढ़, ओजस्वी आत्म विश्वासी युवा जिसके लोहे की मांसपेशिया और फौलाद के स्नायु हो समाज और राष्ट्र में अहिंसक तरीके से परिवर्तन कर सकते हैं ऐसा स्वामी विवेकानंद का दृढ़ विश्वास था। स्वामी विवेकानंद 'बल व अभयम्' को बहुत अधिक महत्व देते हैं। वे अपना आदर्श उस सन्त को मानते हैं जो विद्रोह में मारा गया और जब उसके हृदय में छुरा भौंका जाता है तो वह केवल यह कहने के लिए अपना मौन भंग करता है कि ''और तू भी 'वही''(उसी ईश्वर का अंश) है।''[11] सामान्य तौर पर दुर्बलता के कारण ही व्यक्ति दूसरों को चोट पहुंचाता है। जब व्यक्ति सत्य को साहस के साथ स्वीकार करें तो वह स्थिति ही बुराइयों को दूर करने का माध्यम बनती है।

मार्क्स जैसे विचारक समाज परिवर्तन में साधन को महत्व नहीं देते। लेकिन भारतीय चिंतन धारा में साधन और साध्य की पवित्रता को अत्यधिक महत्व दिया गया है। फिर चाहे वे स्वामी विवेकानंद हो या महात्मा गांधी। ''साध्य या लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साधनों पर ध्यान देना भी उतना ही आवश्यक है और यह सब प्रकार की सफलता की कुंजी है''।[12] स्वामी विवेकानंद तो साधनों को इतना अधिक महत्व देते हें कि यदि साधनपूर्ण हे तो साध्य प्राप्त होता ही है। कार्य है ध्येय की सिद्धि और कारण है साधन। साधन की ओर ध्यान देते रहना जीवन का बड़ा रहस्य है।[13] लक्ष्य को पाने के लिए खुद में भी सुधार आवश्यक है। स्वयं

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:2(1), February: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd February 2023
Publication Date:10th March 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/12.02.14
www.ijmer.in

को पवित्र और अच्छा बनाना आवश्यक है[14] तभी निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करना सम्भव है। इसी परम्परा को गांधीजी ने आगे जाकर अधिक विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया है। जब वे सत्याग्रह में प्रतिपक्षी के साथ–साथ स्वयं में सुधार को भी पूर्ण महत्व देते हैं।

स्वामी जी के चिंतन में अहिंसा का आधार मानव की आत्मातत्व के स्तर पर समानता है। सभी में उसी ईश्वर का अंश है इसलिए यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे के प्रति हिंसा करता है तो वह स्वयं के प्रति ही उस भाव को प्रकट करता है। भारतीय राष्ट्रवाद में जीवन का संचार करने वाले स्वामी विवेकानंद प्रेम और परोपकार को महत्व देते हैं। इसके लिए गरीबों की स्थिति में सुधार, शिक्षा को बढ़ावा देना तथा धार्मिक रूढ़ियों और कर्मकांड को खत्म करने पर जोर देते हैं।वे समाज के हित में कार्य करने पर बल देते हैं। इससे प्रत्येक व्यक्ति में उत्साह जागृत होगा और पद दलित स्थिति से ऊपर उठने का मौका मिलेगा। स्वामी जी इस आंदोलन को अत्यंत अहिंसक तरीके से पूरे भारत में चलाने का आह्वान करते हैं। इससे साहस का संचार होगा, लोग अपनी स्थिति को पहचान कर स्वाधीनता की बेड़ियां तोड़ने को आगे आएंगे। लेकिनइन सबका आधार, परोपकार और प्रेम ही होगा। स्वामी विवेकानंद के चिंतन में घृणा नहीं है। गरीब, पददलितों के प्रति संवेदना है। दरिद्रनारायण की स्थिति सुधारने का संकल्प है। जो स्वतः ही समाज और राष्ट्र में अहिंसक भावधारा को आगे बढ़ाता है। भारत में अहिंसक मानवतावादी समाज व्यवस्था का विकास करने में विवेकानंद का योगदान अभूतपूर्व है। उन्होंने भारत को विश्व अलगाववाद से निकाल कर आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयवाद की मुख्यधारा से जोड़ा। वे आधुनिक विश्व के मानवीय संबंधों के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप के बारे में पूर्णतः सजग थे। उन्होंने अहिंसा का उपयोग केवल भारत में आंतरिक रूप से ही नहीं किया वरन् अन्य राष्ट्रों की अच्छाइयों को अपनाने पर भी जोर दिया। उन्हें भारत से अत्यधिक प्रेम था। परन्तु समग्र मानवता से भी वे समान रूप से प्रेम करते थे और यही उनके चिंतन में अहिंसा तत्व का आधार बना।

संदर्भ

1. रसेल बी.प्दकपअपकनंस ंदक ।नजीवतपजलए स्वदकवद 1948.49 फनंजमक पद महात्मा गांधी का समाजदर्शन, महादेव प्रसाद, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़ 1989 पृष्ठ 64
2. एस. राधा कृष्णन्, रीलिजन एंड सोसाइटी,लंदन, 1947, पृष्ठ 17।
3. कृष्णलाल हंस, शक्तिदायी विचार (हिन्दी अनुवाद) रामकृष्ण मिशन, नागपुर, 1986 पृष्ठ 15
4. उपरोक्त, पृष्ठ 32
5. उपरोक्त, पृष्ठ 14
6. स्वामी रंगनाथानन्द, स्वामी विवेकानंद का मानवतावाद, अद्वैत आश्रम, कलकत्ता 1995 पृष्ठ 42
7. पं. नेहरू, जवाहरलाल, भारत एक खोज, सस्ता साहित्य, मंडल, नई दिल्ली 1986, पृष्ठ 100
8. नोट नं. 3 पृष्ठ 17
9. यंग इंडिया, 09 मार्च 1920
10. विवेकानंद साहित्य, अद्वैत आश्रम, खंड 5, पृष्ठ 88–89
11. स्वामी विवेकानंद, सूक्तियां एवं सुभाषित, रामकृष्णमठ, नागपुर 1998, पृष्ठ 42
12. स्वामी विवेकानंद, शिक्षा, रामकृष्ण मठ, नागपुर 1985, पृष्ठ 52
13. उपरोक्त नोट नं. 12 पृष्ठ 53
14. नोट नं. 12 पृष्ठ 63